यूनोस्को सब-रीजनल कान्फ्रेंस का समापन, विरासत और संस्कृति संरक्षण पर हुआ मंथन

धरोहर संरक्षण को नया आयाम देगा 'द भोपाल विजन स्टेटमेंट'

यूनेस्को सब रीजनल कान्फ्रेंस नवाचारों और दक्षिण एशियाई क्षेत्र सहित पूरे विश्व में विरासतों के संरक्षण का माध्यम बनेगी। इससे भोपाल को विश्वस्तर पर पहचान मिली है। कान्फ्रेंस के वैचारिक मंथन से तैयार हुआ दस्तावेज 'द भोपाल विजन स्टेटमेंट' कहलाएगा। यह विश्व धरोहर संरक्षण को नया आयाम देगा। सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण एवं विकास के लिए आपसी समन्वय और सहयोग बढ़ाने के प्रण के साथ कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित दो दिवसीय सब रीजनल कान्फ्रेंस का समापन हो गया।

मंगलवार को सम्मेलन के दौरान थीमेटिक सेशन में देशों और संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विरासतों पर क्लाइमेट चेंज के प्रभाव, नई तकनीक से विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के विषय पर विचार मंथन किया। विश्व विरासत और सांस्कृतिक परिदृश्य थीम पर हुए सेशन में मेघालय से संजीव शंकर और दिसंबर खोंगसदम ने लिविंग रूट ब्रिज कल्चरल लैंडस्केप कम्युनिटी एंड साइंस बेस्ड अप्रोच फार नेचरिंग सस्टेनेबिलिटी पर मप्र पर्यटन से ओपी मिश्रा और डा. विशाखा कावथेकर ने द रेलिक लैंडस्केप्स इन इंडिया एस वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स द जर्नी फ्राम सस्टेनेबिलिटी टू रिस्पांसिबिलिटी पर और जाह्नवी शर्मा ने प्रोजेक्ट मौसम मैरिटाइम कल्चरल लैंडस्केप पर प्रस्तुतीकरण दिया। प्रेजेंटेशन के विषयों पर श्रीलंका के सेंट्रल कल्चरल फंड के महानिदेशक प्रो. गामिनी राणा सिंघे और भूटान के संस्कृति और जोंगखा विकास विभाग के कार्यकारी वास्तुकार कर्मा तेजिंन ने विचार मंथन किया। इस मौके पर हिस्टोरिक सिटीज एंड स्टोरी कार्बन लैंडस्केप की थीम पर हुए सेशन में निशांत उपाध्याय, डा. रान इप्पिच और जुन्ही हान समेत कई लोगों ने प्रेजेंटेशन दिया।

कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में सम्मेलन के दौरान मौजूद देश-विदेश से आए प्रतिनिधि। ● सौजन्य- एजेंसी

ऐतिहासिक इमारतों पर भी पड़ रहा क्लाइमेट चेंज का असर

अंतिम सेशन वर्ल्ड हेरिटेज एंड क्लाइमेट चेंज एंड इंटेंजिबल कल्चरल हेरिटेज की थीम पर हुआ। सेशन में डा. विशाखा कावथेकर ने वाटर रिसोर्स मैनेजमेंट आफ एंसिएंट इंडिया एंड इट्स एप्लीकेबिलिटी फार प्रिपेयर आफ क्लाइमेट चेंज पर और मुनीश पंडित ने क्लाइमेट चेंज एंड इट्स इंपैक्ट आन कल्चरल हेरिटेज पर प्रेजेंटेशन दिया। कोरल स्टोन कंजर्वेशन के विशेषज्ञ मुनिश पंडित ने कहा कि क्लाइमेट चेंज का असर ऐतिहासिक इमारतों पर भी पड़ रहा है। इस असर को हम सीधे देख पाते हैं, लेकिन सांस्कृतिक विरासत पर जो असर हो रहा है उसका आकलन नहीं किया जा रहा। उन्होंने मालद्वीप का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां 1992 में कोरल रीफ को बैन कर दिया गया। इसका असर हस्तकला शिल्प पर हुआ, क्योंकि कारीगरों को शिल्प तैयार करने के लिए कोरल मिलना ही बंद हो गए। क्लाइमेट चेंज से कई इलाकों में ज्यादा बारिश होने लगी। इससे वहां की इमारतें कमजोर होने का खतरा मंडराने लगा है। सरकार जब ऐसे मामलों में निर्णय लेती ही तो पलायन बढ़ता है। इससे क्षेत्रीय संस्कृति खत्म ही हो जाती है।